११९. सार्वभौमता, अखण्डता विधि से ही मानव कुल समझदारी का एकरूपता में आता है

११-१०-१४

समझदारी मानव में नियति सहज प्रदत्त वैभव है | सर्वदेश काल, भाषा में मानव समझदारी को समझने, प्रमाणित करने के प्रयत्न में है | इसी क्रम में रूप, गुण, स्वभाव, धर्म के रूप में प्रस्तुत होता रहा है | सर्वप्रथम मानव संवेदनाओं को प्रयोग किया | संवेदनाओं के आधार पर ही मानव विकसित होना प्रमाणित हुआ | संवेदनाएँ शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गन्धेन्द्रियों के कार्यक्रम के रूप में हैं | इसी क्रम में मानव अपने विकास को प्रमाणित करते गया | अभी तक मानव केवल व्यक्तिवाद, समुदायवाद तक पहुँचा है | समुदायवाद होना अनेक भाषा के रूप में होना प्रमाणित हुआ | हर जगह में मानव सोचा है | फलस्वरूप भाषा को गढा है | भाषाएँ मानव का प्रयत्न का प्रमाण हैं | भाषा के बिना मानव का गति नहीं है | भाषाएँ रहेंगी, जगह-जगह की भाषाएँ रहेंगी | सर्वभाषा में सच्चाई को समझने का अभीष्ट समाहित है | सच्चाई के प्रति हर व्यक्ति समर्पित है | हर अवस्था के मानव सच्चाई के समझने के पक्ष में हैं | इसी कारण बारम्बार संविधान में सच्चाई के प्रति शोध, अनुसंधान होता रहता है | इसको भले प्रकार से मानव देख सकता है | इसका मूल तथ्य शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंधेन्द्रियों का कार्यक्रम के आधार पर ही है | परम्परा के अनुसार शब्द प्रधान वस्तु है |

दूसरा स्पर्श, तीसरा रूप, रस चौथा, गंध पाँचवाँ | इस ढंग से पांच संवेदनशीलता का स्वरूप स्पष्ट होता है | संवेदनशीलता विधि से ही मानव विद्वान होना माना जाता है | सर्वप्रथम वर्ष में वेद का निर्माण हुआ | वैदिक विचार के अनुसार मानव सुखधर्मी होना पहचाना गया | शब्द से ही मानव सुखी होता है, ऐसा सोचा | शब्द प्रमाण को मान लिया, जबकि सम्पूर्ण संवेदनशीलता ही प्रमाण है | सभी संवेदंशीलताएं शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंधेन्द्रियों के 'रूप में विद्यमान हैं | इसे सदा-सदा के लिये मानव अनुभव कर सकता है | अनुभव करने का ताकत सर्वमानव में निहित है, अथवा तरीका है | सर्वमानव बोलना सीखता ही है | इसी में अतिदीर्घ काल समाप्त हो गया | जंगल युग से समय का निर्धारण किया जाता है | समय के संदर्भ में मानव के अलावा दूसरा कोई समझता नहीं | अर्थात जीव संसार, वनस्पति संसार, पदार्थ संसार ये तीनों समझते नहीं | अपना-अपना भाषा सभी जानते हैं | सभी भाषा का दृष्टा मानव ही है | मानव अपने भाषा को सर्वश्रेष्ठ बनाया है संवेदनशीलता के आधार पर | संवेदंशीलताएं नियति विधि से मानव में ही प्रतिष्ठित हैं, प्रदर्शित हैं |

इसके आधार पर मानव को समझना सुलभ हो गया क्योंकि मानव ही समझने वाला, समझाने वाला हुआ | इसीलिये समझाने के क्रम में जीवों को भी समझाया | कुछ जीव अनुकरण किया कुछ भाग को | किसी जीव में सभी का सभी बात | मानव जो प्रतिष्ठित है, उसे जीव समझा नहीं, आंशिक रूप ही रह गया | इस तथ्य को समझने के बाद हम निर्णय कर सकते हैं कि मानव ज्ञानावस्था में है | मानवन द्रष्टा है, भोक्ता है, कर्ता है | ये तीनों चीज मानव में निहित हैं | इसी के संदर्भ में सतत प्रयास किया- साहित्य विधि से, शास्त्र विधि से, दर्शन विधि से | इन तीनों विधि से किया गया कार्यक्रम ही साहित्य के रूप में प्रस्तुत हुआ | यही आदर्शवाद का आधार हुआ | सभी भाषा में इन तीनों प्रकार से साहित्य तैयार हुआ | लेखन विधि से, प्रवचन विधि से, प्रमाण विधि से | प्रमाण विधि से सर्वाधिक भौतिकवादी भाग प्रदर्शित हुआ | यह लेख विधि से आया | लेख को प्रमाण

माना | अभी भी सभी देश लेख को प्रमाण मानते हैं | अर्थात सर्वदेशवासी मानव का लिखा हुआ चीज को प्रमाण मानते हैं | क्या लिखा है, उसको समझना चाहते हैं | हमने जो देखा है वह भोजपत्र में लिखा, ताम्पत्र में लिखा, कागज में लिखा हुआ को देखा वेद विचार | ये तीन बात आज भी समीचीन है | इस क्रम में मानव अपने मर्यादा के अनुसार अथवा संवेदनशीलता के अनुसार लिखने की कोशिश किया | मैं जो लिख रहा हूँ ये भी इसी क्रम में है | मनुष्य ज्यादा से ज्यादा शाब्दिक कार्यक्रम से समझता है | बच्चों को अनुभव करने से यह पता लगता है, बच्चे शब्दों के रूप में सर्वाधिक समझदारी को विकसित करते हैं; समझाने के रूप में उससे कम होता है; जीने के रूप में उससे कम होता है; ऐसा देखा गया | हर व्यक्ति इसको देख सकता है | इससे यह स्पष्ट होता है मनुष्य ही एक व्यक्ति, एक अवस्था है अर्थात मानव एक अवस्था का सृजन है | सृजन का आधार नियति है | नियति का स्वरूप सह-अस्तित्व है | ऐसे ही मैंने देखा है और समझा है | उसी को मैं कह रहा हूँ |

जो उचित समझेगा, अध्ययन करेगा | उचित नहीं समझेगा, अध्ययन नहीं करेगा | यह भी हम मानता हूँ | इस क्रम में मनुष्य धीरे-धीरे बहुतायत विधि से समझने वाला होता है | उसी को बहुमत कहा जाता है | उसी को मानते हुए अर्थात बहुमत को मानते हुये अधिकाधिक लोग समझदार होना ही व्यवस्था का आधार है | सर्वमानव समझदार होगा, ऐसा कल्पना किया नहीं जा सकता | इतना बात जरूर देखा गया कि सर्वमानव समझदारी के पक्ष में है | समझदारी को व्यक्तिवाद, समुदायवाद के रूप में अभी तक पहचाना | अभी तक का मतलब इस लेख को लिखने के पहले तक | ऐसा समझा मानव जात | ऐसा समझने से आगे का विधि बनती है | आगे सोचने पर मानव ही केवल समझदार बनना बनता है | समझदारी केवल सह-अस्तिव को समझना है | समझने का मतलब सह-अस्तित्व को समझना है | समझने का मतलब अनुभव है | अनुभव का मतलब आचरण है | आचरण में नहीं आता, वह अनुभव में नहीं है | इस विधि से मानव अपनी समझदारी को प्रकट करता है, अपने व्यक्तित्व को भी स्थापित करता है | कौन कितना काम किया, कौन कितना उपकार किया, कितना उपकार समझ में आया है, परम्परा बना है; इन सब पर शोध होता है | इसी क्रम में मानव अपना प्रतिष्ठा को बनाए रखा है |

जय हो, मंगल हो, कल्याण हो |

- ए. नागराज | प्रणेता एवं लेखक | मध्यस्थ दर्शन (सह-अस्तित्ववाद) | दिव्य पथ संस्थान(भजनाश्रम) | अमरकंटक | जिला-अनूपपुर(म. प्र.))